ई + ई	= ई				
मही + ईश्वर	=	महीश्वर,	सती + ईश	=	सतीश
पृथ्वी + ईश्वर	=	पृथ्वीश्वर,	रजनी + ईश	=	रजनीश
पृथ्वी + ईश	=	पृथ्वीश,	जानकी + ईश	=	जानकीश
उ + उ	= ऊ				
विधु + उदय	=	विधूदय,	लघु + उत्पात	=	लघूत्पात
भानु + उदय	=	भानूदय			
ऊ + उ	= ऊ				
वधू + उत्सव	=	वधूत्सव,	भू + उन्नति	=	भून्नति
स्वयम्भू + उदय	=	स्वयम्भूदय,	भू + उद्धार	=	भूद्धार
उ + ऊ	= ऊ				
लघु + ऊर्मि	=	लघूर्मि,	गुरु + ऊहा	=	गुरूहा
सिंधु + ऊर्मि	=	सिंधूर्मि			
ऊ + ऊ	= ऊ				
वधू + ऊहन	=	वधूहन,	स्वयम्भू + ऊह	=	स्वयम्भूह
भू + ऊद्र्ध्व	=	भूद्र्ध्व,	भू + ऊर्जित	=	भूर्जित
ऋ + ऋ	= ॠ				
मातृ + ऋण	=	मातृण			
पितृ + ऋण	=	पितृण			

(2) गुणस्वर सन्धि- ए, ओ, अर्, अल्

यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' और 'ऋ' आए तो दोनों मिलकर क्रमशः 'इ' या 'ई' के स्थान पर 'ए', 'उ' या 'ऊ' के स्थान पर 'ओ' और 'ऋ' के स्थान पर 'अर्' हो जाते हैं। जैसे—

अ + इ	= ए				
देव + इन्द्र	=	देवेन्द्र,	गज + इन्द्र	=	गजेन्द्र
अ + ई	= ए				
गण + ईश	=	गणेश,	सुर + ईश्वर	=	सुरेश्वर
देव + ईश	=	देवेश,	नर + ईश	=	नरेश
सुर + ईश	=	सुरेश,	ब्रज + ईश	=	ब्रजेश
आ + इ	= ए				
रमा + इन्द्र	=	रमेन्द्र,	महा + इन्द्र	=	महेन्द्र

आ + ई	=	ए			
रमा + ईश्वर	=	रमेश्वर,	महा + ईश	=	महेश
रमा + ईश	=	रमेश			
अ + उ	=	ओ			
सूर्य + उदय	=	सूर्योदय,	हित + उपदेश	=	हितोपदेश
चन्द्र + उदय	=	चन्द्रोदय ।			
आ + उ	=	ओ			
महा + उत्सव	=	महोत्सव,	महा + उदय	=	महोदय
अ + ऊ	=	ओ			
समुद्र + ऊर्मि	=	समुद्रोर्मि,	एक + ऊनविंशति	=	एकोनविंशति
आ + ऊ	=	ओ			
महा + ऊर्मि	=	महोर्मि,	रम्भा + ऊरु	=	रम्भोरु
महा + ऊरु	=	महोरु,	गंगा + ऊर्मि	=	गंगोर्मि
अ + ऋ	=	अर्			
देव + ऋषि	=	देवर्षि,	सप्त + ऋषि	=	सप्तर्षि
आ + ऋ	=	अर्			
महा + ऋषि	=	महर्षि,	राजा + ऋषि	=	राजर्षि

अपवाद- स्व + ईर = स्वैर, अक्ष + ऊहिणी = अक्षौहिणी, प्र + ऊढ़ = प्रौढ़, सुख + ऋत = सुखार्त, दश + ऋण = दशार्ण आदि ।

(3) वृद्धि स्वर सन्धि—ऐ, औ

यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' और 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के स्थान में 'औ' हो जाते हैं । जैसे—

अ + ए	=	ऐ			
एक + एक	=	एकैक,	हित + एषी	=	हितैषी
आ + ए	=	ऐ			
सदा + एव	=	सदैव,	तथा + एव	=	तथैव
अ + ऐ	=	ऐ			
मत + ऐक्य	=	मतैक्य,	मम + ऐश्वर्य	=	ममैश्वर्य
नव + ऐश्वर्य	=	नवैश्वर्य			
आ + ऐ	=	ऐ			
महा + ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य			
राजा + ऐश्वर्य	=	राजैश्वर्य			

आ + ओ	=	औ			
जल + ओका	=	जलौका,	मांस + ओदन	=	मांसोदन
परम + ओजस्वी	=	परमौजस्वी	जल + औघ	=	जलौघ
अ + औ	=	औ			
परम + औषध	=	परमौषध,	उत्तम + औषध	=	उत्तमौषध
आ + ओ	=	औ			
महा + ओज	=	महौज,	महा + ओजस्वी	=	महौजस्वी
आ + औ	=	औ			
महा + औदार्य	=	महौदार्य,	महा + औषध	=	महौषध

अपवाद—अ या आ के आगे ओष्ठ शब्द आवे तो विकल्प से ओ अथवा औ होता है, जैसे—बिंब + ओष्ठ = बिंबोष्ठ वा बिंबौष्ठ, अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठ या अधरौष्ठ ।

(4) यण स्वर सन्धि— य, र, ल, व

यदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ', 'ऋ', के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'इ-ई' का 'य्', 'उ-ऊ' का 'व्' और 'ऋ' का 'र्' हो जाता है । जैसे—

इ, ई + अन्य भिन्न स्वर	=	य् ।			
यदि + अपि	=	यद्यपि,	अति + अन्त	=	अत्यन्त
इति + आदि	=	इत्यादि,	अति + आचार	=	अत्याचार
प्रति + उत्तर	=	प्रत्युत्तर,	प्रति + एक	=	प्रत्येक
अति + आवश्यक	=	अत्यावश्यक,	अति + उत्तम	=	अत्युत्तम
अति + ऊष्म	=	अत्यूष्म,	नदी + अम्बु	=	नद्यम्बु
देवी + आगता	=	देव्यागता,	नि + ऊन	=	न्यून
उ ऊ + अन्य भिन्न स्वर	=	व्			
मनु + अन्तर	=	मन्वतर,	सु + आगत	=	स्वागत
अनु + अय	=	अन्वय,	अनु + एषण	=	अन्वेषण
पशु + आदि	=	पश्वादि,	सु + अल्प	=	स्वल्प
अनु + इति	=	अन्विति,	अनु + आगत	=	अन्वागत
मधु + आलय	=	मध्वालय,	गुरु + ओदन	=	गुर्वोदन
गुरु + औदार्य	=	गुर्वौदार्य,	अनु + इत	=	अन्वित
ऋ + अन्य भिन्न स्वर	=	र्			
पितृ + आदेश	=	पित्रादेश,	पितृ + अनुमति	=	पित्रनुमति
पितृ + आलय	=	पित्रालय,	मातृ + आनन्द	=	मात्रानन्द
मातृ + उपदेश	=	मात्र्युपदेश ।			

(5) अयादि स्वर सन्धि- अय्, आय्, अव्, आव्

यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का 'अय्', 'ऐ' का 'आय्', 'ओ' का 'अव्' और 'औ' का 'आव्' हो जाता है। उदाहरण—

ए-अय्

ने + अन = नयन, शे + अन = शयन

चे + अन = चयन

ऐ-आय्

गै + अक = गायक, गै + अन = गायन

नै + अक = नायक

ओ-अव्

पो + अन = पवन, भो + अन = भवन

पो + इत्र = पवित्र, श्रो + अन = श्रवण

गो + ईश = गवीश

औ-आव्

पौ + अन = पावन, भौ + अन = भावन

भौ + उक = भावुक, पौ + अक = पावक

श्रौ + अन = श्रावण, नौ + इक = नाविक

व्यंजन सन्धि

व्यंजन वर्ण के साथ व्यंजन अथवा स्वर के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन सन्धि कहते हैं। जैसे- जगत् + ईश = जगदीश, जगत् + नाथ = जगन्नाथ।

(1) यदि 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प्', के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आए या, य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान में अपने ही वर्ण का तीसरा वर्ण हो जाता है। उदाहरण—

दिक् + गज = दिग्गज, दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम

वाक् + जाल = वाग्जाल, अच् + अन्त = अजन्त

षट् + दर्शन = षड्दर्शन, सत् + वाणी = सद्वाणी

तत् + रूप = तद्रूप, अप् + इन्धन = अबिन्धन

जगत् + आनन्द = जगदानन्द, वाक् + ईश = वागीश

षट् + आनन = षडानन, अप् + ज = अब्ज।

(2) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद म या न आये तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं। उदाहरण—

वाक् + मय = वाङ्मय, षट् + मास = षण्मास

षट् + मार्ग = षण्मार्ग, उत् + नति = उन्नति

जगत् + नाथ = जगन्नाथ, अप् + मय = अम्मय

(3) यदि 'म्' के बाद कोई स्पर्श व्यंजन वर्ण आए तो म् का अनुस्वार या बाद वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। जैसे—

किम् + चित् = किंचित्, किञ्चिद्
पम् + चम = पंचम, पञ्चम
अहम् + कार = अहंकार, अहङ्कार
सम् + गम = संगम, सङ्गम

(4) त् वा द् के आगे च वा छ हो तो त् वा द् के स्थान में च् होता है; ज वा झ हो तो ज्, ट वा ठ हो तो ट्; ड, वा ढ हो तो ड्; और ल हो तो ल् होता है। जैसे- शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र; उत् + चारण = उच्चारण; सत् + जन सज्जन; महत् + छत्र = महच्छत्र; विपद् + जाल = विपज्जाल; तत् + लीन = तल्लीन।

(5) त् वा द् के आगे श हो तो त् वा द् के बदले च् और श के बदले छ होता है; और त् वा द् के आगे ह हो तो त् वा द् के स्थान में द् और ह के स्थान में ध होता है। जैसे—

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र; उत् + हार = उद्धार।

(6) छ के पूर्व स्वर हो तो छ के बदले च्छ होता है। जैसे—

आ + छादन = आच्छादन, परि + छेद = परिच्छेद।

(7) म् के आगे स्पर्श वर्ण हो तो म् के बदले विकल्प से अनुस्वार अथवा उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण आता है। जैसे—

सम् + कल्प = संकल्प वा सङ्कल्प,
किम् + चित् = किंचित् या किञ्चित्,
सम् + तोष = संतोष वा सन्तोष,
सम् + पूर्ण = संपूर्ण वा सम्पूर्ण।

(8) म् के आगे अंतस्थ वा ऊष्म वर्ण हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है। जैसे—

किम् + वा = किंवा, सम् + योग = संयोग,
सम् + हार = संहार, सम् + वाद= संवाद।

इस नियम का अपवाद भी मिलता है,—जैसे- सम् + राज् = सम्राज् (ट्)।

(9) ऋ, र, वा ष के आगे न हो और इनके बीच में चाहे स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार य, व, ह आवे तो न का ण हो जाता है। जैसे—

भर् + अन = भरण,
भूष् + अन = भूषण, राम + अयन = रामायण
प्र + मान = प्रमाण, तृष् + ना = तृष्णा
ऋ + न = ऋण,

(10) यदि किसी शब्द के आद्य स से पूर्व अ, आ को छोड़ कोई स्वर आवे तो स के स्थान पर ष होता है। जैसे—

अभि + सेक = अभिषेक,
नि + सिद्ध = निषिद्ध, वि + सम = विषम
सु + सुप्ति = सुषुप्ति।

यहाँ द्रष्टव्य है कि जिस संस्कृत धातु में पहले न और उसके पश्चात् ऋ या र उससे बने हुए शब्द का स पूर्वोक्त वर्णों के पीछे आने पर ष नहीं होता, जैसे—

वि + स्मरण (स्मृ-धातु) = विस्मरण
अनु + सरण (सृ-धातु) = अनुसरण
वि + सर्ग (सृज्-धातु) = विसर्ग

(11) यौगिक शब्दों में यदि प्रथम शब्द के अन्त में न् हो तो उसका लोप होता है, जैसे—

राजन् + आज्ञा = राजाज्ञा
हस्तिन् + दंत = हस्तिदंत
प्राणिन् + मात्र = प्राणिमात्र
धनिन् + त्व = धनित्व ।

यहाँ द्रष्टव्य है कि अहन् शब्द के आगे कोई भी वर्ण आवे तो अन्त्य न् के बदले र होता है, पर रात्रि, रूप शब्द पर रात्रि, रूप शब्दों के आने से न का उ होता है, और संधि के नियमानुसार अ + उ मिलाकर ओ हो जाता है, जैसे—

अहन् + गण = अहर्गण, अहन् + मुख = अहर्मुख
अहन् + रात्र = अहोरात्र, अहन् + रूप = अहोरूप

विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं । जैसे तपः + वन = तपोवन, निः + अंतर = निरंतर ।

(1) यदि विसर्ग के आगे च वा छ हो तो विसर्ग का श् हो जाता है, ट वा ठ हो तो ष्, और त वा थ हो तो स् होता है । जैसे—

निः + चल = निश्चल, निः + छिद्र = निश्छिद्र
धनुः + टंकार = धनुष्टंकार,
ततः + ठकार = ततष्ठकार, मनः + ताप = मनस्ताप
निः + तार = निस्तार, दुः + थल = दुस्थल

(2) विसर्ग के पश्चात् श, ष वा स आवे तो विसर्ग जैसा का तैसा रहता है अथवा उसके स्थान में आगे का वर्ण हो जाता है । जैसे—

दुः + शासन = दुःशासन, दुश्शासन
निः + सन्देह = निःसन्देह, निस्सन्देह

(3) विसर्ग के आगे, क, ख, वा प, फ आवे तो विसर्ग का कोई विकार नहीं होता, जैसे—

रजः + कण = रजःकण, पयः + पान = पयःपान

(4) यदि विसर्ग के पूर्व इ या उ हो तो क, ख, या प, फ के पहले विसर्ग के बदले ष् होता है, जैसे—

निः + कपट = निष्कपट दुः + कर्म = दुष्कर्म
निः + फल = निष्फल, दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति
दुः + कर = दुष्कर, निः + कारण = निष्कारण ।

अपवाद— दुः + ख = दुःख, निः + पक्ष = निःपक्ष, निष्पक्ष ।

(5) कुछ शब्दों में विसर्ग के बदले स् आता है, जैसे—

नमः + कार = नमस्कार, पुरः + कार = पुरस्कार

भाः + कर = भास्कर, भाः + पति = भास्पति ।

(6) यदि विसर्ग के पूर्व अ हो और आगे घोष व्यंजन हो तो अ और विसर्ग (अः) के बदले ओ हो जाता है । जैसे—

अधः + गति = अधोगति, मनः + योग = मनोयोग

तेजः + राशि = तेजोराशि, वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध ।

(7) यदि विसर्ग के पूर्व अ हो और आगे भी अ हो तो आ के पश्चात् दूसरे अ का लोप हो जाता है और उसके बदले लुप्त अकार का चिन्ह 'ऽ' कर देते हैं । जैसे—

प्रथमः + अध्याय = प्रथमोऽध्याय

मनः + अनुसार = मनोऽनुसार ।

(8) यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़कर और कोई स्वर हो और आगे कोई घोष वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान में र् होता है; जैसे—

निः + आशा = निराशा, दुः + उपयोग = दुरुपयोग,

निः + गुण = निर्गुण, बहिः + मुख = बहिर्मुख ।

(9) यदि र् के आगे र हो तो र् का लोप हो जाता है और उसके पूर्व का ह्रस्व स्वर दीर्घ कर दिया जाता है; जैसे—

निर् + रस = नीरस, निर् + रोग = नीरोग

पुनर् + रचना = पुनारचना (हिन्दी-पुनर्रचना)

कुछ प्रमुख शब्दों के सन्धिविच्छेद

अन्यायः = अ + नि + आय,
अन्वय = अनु + अय,
अत्यधिक = अति + अधिक,
अन्योन्याश्रय = अन्य + अन्य + आश्रय
अभीष्ट = अभि + इष्ट,
अन्यान्य = अन्य + अन्य,
अधोगति = अधः + गति,
अत्यन्त = अति + अन्त,
अहर्निश = अहः = निश,
अब्ज = अप् + ज,
अम्मय = अप् + मय,
अत्मोत्सर्ग = आत्म + उत्सर्ग,

अन्तःकरण = अन्तर + करण
अभ्युदय = अभि + उदय
अन्तःपुर = अन्तर् + पुर
अधीश्वर = अधि + ईश्वर
अत्याचार = अति + आचार
अरण्याच्छादित = अरण्य + आच्छादित
अतएव = अतः + एव
अन्तर्निहित = अन्तः + निहित
अन्वेषण = अनु + एषण
अजन्त = अच् + अन्त
अभ्यागत = अभि + आगत
अन्नाभाव = अन्न + अभाव

अम्बूर्म्मि = अम्बु + ऊर्म्मि,
अत्युत्तम = अति + उत्तम
अत्यावश्यक = अति + आवश्यक,
अहंकार = अहम् + कार
अन्वित = अनु + इत,
आशीर्वाद = आशीः + वाद
आकृष्ट = आकृष् + त,
आविष्कार = आविः + कार
आच्छादन = आ + छादन,
आद्यन्त = आदि + अन्त
अन्ताराष्ट्रीय (हिन्दी में-अन्तर्राष्ट्रीय) = अन्तर् + राष्ट्रीय
अन्तर्यामी = अन्तः + याम,
अन्तरात्मा = अन्तः + आत्मा
अहरहः = अहः + अहः,
अधोमुख = अधः + मुख
अब्द = अप् + द
इत्यादि =इति + आदि,
ईश्वरेच्छा = ईश्वर + इच्छा,
उच्छिष्ट = उत् + शिष्ट,
उच्छृङ्खलता = उत् + श्रृंखल
उच्छ्वास = उत् + श्वास,
उल्लास = उत् + लास
उद्धार = उत् + हार,
उन्नायक = उत् + नायक
उन्नति = उत् + नति,
उद्धत = उत् + हत
उद्धृत = उत् + हृत,
उन्मूलित = उत् + मूलित
उद्विग्न = उत् + विग्न,
उद्गम = उत् + गम
उल्लंघन = उत् + लंघन,
उपेक्षा = उप + ईक्षा
उद्घाटन = उत् + घाटन,
उत्तम = उत् + तम
उच्चारण = उत् + चारण,
उच्छिन्न = उत् + छिन्न
उन्मीलित = उत् + मीलित,
उदय = उत् + अय
उन्मत्त = उत् + मत्त,
उपर्युक्त = उपरि + उक्त
उज्ज्वल = उत् + ज्वल,
उड्डयन = उत् + डयन
उच्छिष्ट = उत् + शिष्ट,
उल्लेख = उत् + लेख
उन्नयन = उत् + नयन,
उन्माद = उत् + माद
उद्योग = उत् + योग,
एकैक = एक + एक
उद्भव = उत् + भव,
उद्धव = उत् + हव
कृदन्त = कृत् + अन्त,
कुलटा = कुल + अटा
कल्पान्त = कल्प + अन्त,
कपीश = कपि + ईश
किन्नर = किम् + नर,
कवीश्वर = कवि + ईश्वर
तथैव = तथा + एव,
तदाकार = तत् + आकार
तल्लीन = तत् + लीन,
तथापि = तथा + अपि
तद्धित = तत् + हित्,
तद्रूप = तत् + रूप
तेजोपुंज = तेजः + पुंज,
तपोभूमि = तपः + भूमि
तृष्णा = तृष् + ना,
तेजोमय = तेजः + मय
तेजोराशि = तेजः + राशि,
तट्टीका = तत् + टीका

तपोवन = तपः + वन,
देवेन्द्र = देव + इन्द्र,
दुर्नीति + दुः + नीति,
दिग्गज = दिक् + गज्,
दिग्भ्रम = दिक् + भ्रम,
दावानाल = दाव + अनल,
दुस्तर = दुः + तर,
दुर्वह = दुः + वह,
देव्यागम = देवी + आगम,
दुर्जन = दुः + जन,
नमस्कार = नमः + कार,
नद्यम्बु = नदी + अम्बु,
नारीश्वर = नारी + ईश्वर,
नद्यूर्मि = नदी + ऊर्मि,
नाविक = नौ + इक,
निश्चल = निः + चल,
निस्सृत = निः + सृत,
निराधार = निः + आधार,
निरीक्षण = निः + ईक्षण,
निरीह = निः + ईह,
निष्पाप = निः + पाप,
निर्बिवाद = निः + विवाद,
निश्चिन्त = निः + चिन्त,
निर्झर = निः + झर,
निश्चय = निः + चय,
निष्प्राण = निः + प्राण,
निश्शब्द = निः + शब्द,
निर्जल = निः + जल,
निष्कारण = निः + कारण,
निस्तार = निः + तार,
निर्गुण = निः + गुण,
नीरव = निः + रव,
परमौषध = परम + औषध,
परमेश्वर = परम + ईश्वर,
पावन = पौ + अन,
पित्रादेश = पितृ + आदेश,

तिरस्कार = तिरः + कार
दुश्शासन = दुः + शासन
देवेश = देव + ईश
दुर्ग = दुः + ग
दिगम्बर = दिक् + अम्बर
दुरस्थल = दुः + स्थल
दुर्धर्ष = दुः + धर्ष
दुर्दिन = दुः + दिन
देवर्षि = देव + ऋषि
दुष्कर = दुः + कर
नारायण = नार + अयन
नदीश = नदी + ईश
न्यून = नि + ऊन
नयन = ने + अन
नायक = नै + अक
निश्छल = निः + छल
निस्सन्देह = निः + सन्देह
निस्सार = निः + सार,
निष्काम = निः + काम
निषिद्ध = निः + सिद्ध
निषिद्ध = निसिधृ + त
निस्सहाय = निः + सहाय
निरर्थक = निः + अर्थक
निरन्तर = निः + अन्तर
निर्मल = निः + मल
निर्भर = निः + भर
निरुद्देश्य = निः + उद्देश्य
निरुपाय = निः + उपाय
निष्फल = निः + फल
निर्विकार = निः + विकार
निष्कपट = निः + कपट
निरोग = निः + रोग
परमार्थ = परम + अर्थ
परमौजस्वी = परम + ओजस्वी
पावक = पौ + अक
पंचम = पम् + चम

पुरुषोत्तम = पुरुष + उत्तम,
प्रत्युत्तर = प्रति + उत्तर,
पित्रनुमति = पितृ + अनुमति,
पवन = पो + अन,
पवित्र = पो + इत्र,
प्रत्यय = प्रति + अय,
परिच्छेद = परि + छेद,
परीक्षा = परि + ईक्षा,
पदोन्नति = पद + उन्नति,
पश्वधम = पशु + अधम,
प्रोत्साहन = प्र + उत्साहन,
परन्तु = परम + तु,
प्रातःकाल = प्रात + काल,
पयोद = पयः + द,
पयःपान = पय + पान,
परमार्थी = परम + अर्थी,
भवन = भो + अन,
भाग्योदय = भाग्य + उदय,
मनोहर = मन + हर,
मनोगत = मनः + गत,
महौज = महा + ओज,
मातृण = मातृ + ऋण,
महोर्मि = महा + ऊर्मि,
मुनीन्द्र = मुनि + इन्द्र,
महाशय = महा + आशय,
मन्वन्तर = मनु + अन्तर,
महार्णव = महा + अर्णव,
महर्षि = महा + ऋषि,
मनोज = मनः + ज,
महेन्द्र = महा + इन्द्र,
मनोभाव = मनः + भाव,
मनोनुकूल = मनः + अनुकूल ।
यशोदा = यशः + दा,
यथोचित = यथा + उचित,
यशेच्छा = यशः + इच्छा,
यथेष्ट = यथा + इष्ट,

प्रत्येक = प्रति + एक
प्राङ्मुख = प्राक् + मुख
पितृच्छा = पितृ + इच्छा
पुनर्जन्म = पुनः + जन्म
पुरस्कार = पुरः + कार
प्रत्यक्ष = प्रति + अक्ष
प्रांगण = प्र + अंगण
पुनरुक्ति = पुनः + उक्ति
पीताम्बर = पीत + अम्बर
पृष्ठ = पृष् + थ
प्रतिच्छाया = प्रति + छाया
पयोधि = पयः + धि
परिष्कार = परिः + कार

प्रथमोऽध्याय = प्रथम + अध्याय
पृथ्वीश = पृथ्वी + ईश
भानूदयः = भानु + उदय
भावुक = भौ + उक
महौषध = महा + औषध
महाशय = महा + आशय
मतैक्य = मत + ऐक्य
मृण्मय = मृत् + मय,
महीन्द्र = मही + इन्द्र

महेश्वर = महा + ईश्वर
महोत्सव = महा + उत्सव
मृगेन्द्र = मृग + इन्द्र
मनोयोग = मनः + योग
महेश = महा + ईश
मनोरथ = मनः + रथ
मनोविकार = मनः + विकार

यशोधरा = यशः + धरा
यद्यपि = यदि + अपि
यशोऽभिलाषी = यशः + अभिलाषी
युधिष्ठिर = युधि + स्थिर

रमेश = रमा + ईश,
रत्नाकर = रत्न + आकर,
लोकोक्ति = लोक + उक्ति,
विपज्जाल = विपद् + जाल,
वाङ्मय = वाक् + मय,
व्यर्थ = वि + अर्थ,
वीरांगना = वीर + अंगना,
वयोवृद्ध = वयः + वृद्ध,
विद्योन्नति = विद्या + उन्नति,
वाग्जाल = वाक् + जाल,
स्वार्थ = स्व + अर्थ,
सदानन्द = सत् + आनन्द,
शंकर = शम् + कर,
सद्गुरु = सत् + गुरु,
सद्धर्म = सत् + धर्म,
सच्छास्त्र = सत् + शास्त्र,
संयोग = सम् + योग,
संवाद = सम् + वाद,
सदाचार = सत् + आचार,
संवत् = सम् + वत्,
सप्तर्षि = सप्त + ऋषि,
स्वाधीन = स्व + अधीन,
साष्टांग = स + अष्ट + अंग,
सत्याग्रह = सत्य + आग्रह,
सावधान = स + अवधान,
सन्निहित = सम् + निहित,
सद्विचार = सत् + विचार,
सदैव = सदा + एव,
समुच्चय = सम् + उत् + चय,
समुदाय = सम् + उत् + आय,
सर्वोदय = सर्व + उदय,
सूर्योदय = सूर्य + उदय,
सरय्वम्बु = सरयू + अम्बु,
स्वयम्भूदय = स्वयम्भू + उदय,
स्वर्ग = स्वः + ग,
शुद्धोदन = शुद्ध + ओदन,
षड्दर्शन = षट् + दर्शन,

रामायण = राम + अयन
राजर्षि = राज + ऋषि
वध्वैश्वर्य = वधू + ऐश्वर्य
बहिष्कार = बहिः + कार
व्यायाम = वि + आयाम
व्युत्पत्ति = वि + उत्पत्ति
वागीश = वाक् + ईश
व्याप्त = वि + आप्त
व्याकुल = वि + आकुल
वसुधैव = वसुधा + एव
स्वागत = सु + आगत
सुरेन्द्र = सुर + इन्द्र
शिरोमणि = शिरः + मणि
सद्भावना = सत् + भावना
सज्जन = सत् + जन
संकल्प = सम् + कल्प
सन्तोष = सम् + तोष
संचय = सम् + चय
संसार = सम् + सार
संभव = सम् + भव
सीमान्त = सीमा + अन्त
संयम = सम् + यम
सतीश = सती + ईश
समन्वय = सम् + अनु + अय
साश्चर्य = स + आश्चर्य
सर्वोत्तम = सर्व + उत्तम
संगठन = सम् + गठन
सच्चरित्र = सत् + चरित्र
सद्भाव = सत् + भाव
सन्धि = सम् + धि
सरोज = सरः + ज
सरोवर = सरः + वर
सद्वाणी = सत् + वाणी
समुद्रोर्म्मि = समुद्र + ऊर्म्मि
शस्त्रास्त्र = शस्त्र + अस्त्र
शशांक = शश + अंक
श्रेयस्कर = श्रेयः + कर ।

समास

परस्पर अन्वय—विशिष्ट दो या अधिक पदों का मिलकर एक होना समास कहलाता है। समास का विपरीत शब्द है व्यास। वाक्य की सहायता से विश्लेषित शब्दों को व्यास वाक्य अथवा विग्रह-वाक्य कहते हैं। जैसे—कमलनयन एक समास है। कमल के समान जो नयन है—यह व्यास-वाक्य अथवा विग्रह वाक्य है।

सन्धि और समास में अन्तर

(1) समास में कई पदों का योग होता है, जब कि सन्धि में कई वर्णों का योग होता है।

(2) समास में पदों के प्रत्यय समाप्त कर दिये जाते हैं। सन्धि में दो वर्णों में मेल और विकार संभावित होता है, जब कि समास में यह मेल और विकार नहीं होता।

(3) सन्धि के तोड़ने को विच्छेद कहते हैं, जब कि समास का विग्रह होता है। जैसे—नीलाम्बर में दो पद हैं—नीला और अम्बर। सन्धि विच्छेद होगा- नीला + अम्बर। समास विग्रह होगा नीला है जो अम्बर = नीलाम्बर।

समास के मुख्य छः भेद बताए गये हैं—(1) तत्पुरुष (2) कर्मधारय, (3) द्वन्द्व, (4) द्विगु, (5) बहुव्रीहि, (6) अव्ययीभाव।

तत्पुरुष समास

इसमें उत्तरपद प्रधान होता है। जिस समास में पूर्वपद की विभक्ति का लोप होता है और उत्तरपद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसके छः प्रभेद होते हैं- द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी तत्पुरुष। उदाहरण—(विग्रह के साथ)।

द्वितीया तत्पुरुष—देशगत—देश को गया हुआ, गंगाप्राप्त—गंगा को प्राप्त, गिरहकट—गिरह को काटने वाला, पाकिटमार—पाकिट को मारने वाला, चिड़िमार—चिड़ियों को मारने वाला, जेबकतरा—जेब को कतरने वाला आदि।

तृतीया तत्पुरुष—आचारहीन—आचार से हीन, धनहीन—धन से हीन, कर्महीन—कर्म से हीन, श्रीयुक्त—श्री से युक्त, शोकाकुल—शोक से आकुल, गुनभरा—गुन से भरा हुआ, मनमाना—मन से माना आदि।

चतुर्थी तत्पुरुष—रेलभाड़ा—रेल के लिए भाड़ा, ठाकुरसुहाती—ठाकुर के लिए अच्छी लगने वाली बात, रसोईघर—रसोई के लिए घर, पुत्रहित—पुत्र के लिए हित, पुत्रशोक—पुत्र के लिए शोक, हथकड़ी—हाथ के लिए कड़ी।

पंचमी तत्पुरुष—जलजात—जल से जात (उत्पन्न), आकाशवाणी, आकाश से वाणी, ऋणमुक्त—ऋण से मुक्त, देशनिकाला—देश से निकाला हुआ, जन्मरोगी—जन्म से रोगी, कामचोर—

काम से अपने को चुराने वाला, गुरुभाई—गुरु से पढ़कर भाई, पापमुक्त—पाप से मुक्त, पदच्युत—पद से च्युत, अग्निभय—आग से भय ।

षष्ठी तत्पुरुष—देवराज—देवों का राजा, विश्वविद्यालय—विश्व का विद्यालय, कालिदास—काली का दास, लखपति—एक लाख का पति, ठाकुरवाड़ी—ठाकुर की बाड़ी, घुड़दौड़—घोड़ों की दौड़, चायबागान— चाय का बागान, हिन्दुस्थान—हिन्दुओं का स्थान, गजराज—गजों का राजा, राजवंश—राजा का वंश, प्रजापति—प्रजाओं का पति, पशुपति— पशुओं का पति, गुरुसेवा—गुरु की सेवा, यमलोक—यम का लोक ।

सप्तमी तत्पुरुष—घरवास—घर में वास, आपबीती—अपने पर बीती, कर्मपटु—काम में पटु, शास्त्र-प्रवीण—शास्त्र में प्रवीण, नराधम—नरों में अधम, जलमग्न—जल से मग्न, क्षत्रियाधम—क्षत्रियों में अधम, नगरवास—नगर में वास, पुरुषोत्तम—पुरुषों में उत्तम, साहित्यरत्न—साहित्य में रत्न, साहित्य-विशारद—साहित्य में विशारद ।

नञ् समास

यह भी तत्पुरुष समास का ही एक प्रभेद माना जाता है । नञ् अव्यय के आथ जो समास होता है उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं । नञ् 'नहीं' या 'न' का वाचक है । यह व्यंजनादि शब्दों में 'अ' में और स्वरादिक शब्दों में 'अन्' में बदल जाता है । जैसे—अनन्त, अधर्म आदि । नीचे विग्रह सहित उदाहरण दिये जा रहे हैं—

अनुचित—न उचित, अनन्य—न अन्य, अनेक—न एक, अस्थिर—न स्थिर, अधीर—न धीर, असाधु—न साधु आदि । अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं—अनजान, अधूरा, अनभल, अनबन, अनहोनी, अनचिह्न, अनदेखी ।

उपपद तत्पुरुष—संस्कृत के कृत् प्रत्ययों के साथ जो समास होता है उसे उपपद तत्पुरुष समास कहते हैं । विग्रह के साथ उदाहरण—पादप—पैर से पीने वाला, कुंभकार—कुंभ को बनाने वाला, करद—कर देने वाला, द्रुतगामी—तेज चलनेवाला, पंकज—पंक से जन्म लेने वाला, जलज—जल से जन्म लेने वाला, अनुज—पीछे जन्म लेने वाला, मधुप—मधु को पीने वाला, काव्यकार—काव्य बनाने वाला । कुछ हिन्दी के उदाहरण इस प्रकार हैं :—गछचड़ा—गाछ पर चढ़ने वाला, कटफोरवा— काठ को फोड़ने वाला, तिलचट्टा—तिल को चाटने वाला ।

अलुक् तत्पुरुष—समास होने पर विभक्तियों का लोप हो जाता है । जिस व्यधिकरण तत्पुरुष समास में पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता है उसे अलुक् तत्पुरुष समास कहते हैं । विग्रह के साथ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—मनसिज—मन में जन्म लेने वाला, युधिष्ठिर—युद्ध में स्थिर रहनेवाला, सरसिज—सर में जन्म लेने वाला, अन्तेवासी—अन्ते (निकट) में रहने वाला (शिष्य), खेचर—खे (आकाश) में चलने फिरने वाला ।

प्रादि समास

यह तत्पुरुष का ही रूपान्तर है । जिसके पूर्व में प्र, परा, अप्, सम् आदि उपसर्ग हों, वह प्रादि

समास कहलाता है, अर्थात् पूर्व में उपसर्ग और पश्चात् कृदन्त पद से बनने वाला समास प्रादि समास कहलाता है। जैसे—प्रखर, प्रताप, प्रगाढ़, प्रपितामह, अनुताप, प्रभात, अभिमुख, उद्वेल आदि।

नित्य समास

इसमें प्रायः अन्त में अर्थ या अन्तर लगा रहता है। कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं—दर्शनार्थ—दर्शन के लिए, विषयान्तर—अन्य विषय, पाठान्तर—अन्य पाठ, देशान्तर—अन्य देश, जन्मान्तर—अन्य जन्म, मृगयार्थ—मृगया के लिए यह, आदि।

कर्मधारय समास

इसे भी तत्पुरुष समास का ही एक भेद मानते हैं। जिसका पूर्वपद विशेषण और अन्त्यपद विशेष्य है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे—नीलाकाश (नीला है जो आकाश) में पूर्वपद 'नीला' है जो उत्तरपद 'आकाश' का विशेषण है। अन्य उदाहरण :—

परमहंस, नीलकमल, महादान, महात्मा, पीताम्बर, नीलाम्बर, लाल टोपी, हेडमास्टर, लाटसाहब, महारानी, नीलगाय, लालकनेर, खासमहल, कालीमिर्च आदि।

मध्यमपदलोपी कर्मधारय समास

इसे लुप्तपद भी कहते हैं। वस्तुतः जिस समास में पूर्वपद का उत्तरपद से सम्बन्ध बतानेवाला शब्द अध्याहृत रहता है उसे मध्यमपदलोपी कहते हैं। जैसे—शाकपार्थिव— शाकप्रिय पार्थिव, यहाँ 'प्रिय' शब्द लुप्त कर दिया गया है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण—पर्णशाला—पर्ण निर्मित शाला, स्वर्णहार—सोने का बना हार, सिंहासन—सिंह-चिह्नित आसन, स्वर्णकंगन—स्वर्ण निर्मित कंगन, मनीबेग, दहीबड़ा, जीवनबीमा, बनमानुष, घोड़ा गाड़ी, नोन-भात, घी-भात, गोबरगणेश, आमदरबार आदि।

उपमान कर्मधारय

उपमेय में जहाँ उपमान का गुण वर्त्तमान रहता है वहाँ उपमान कर्मधारय समास होता है। उदाहरण—चन्द्रमुख—चाँद के सदृश मुख, घनश्याम—घन के समान श्याम, कुसुमकोमल—कुसुम के समान कोमल, वज्रकठोर—वज्र के समान कठोर, मृगचपल—मृग के समान चपल, चरणकमल—कमल के समान चरण, पाणिपल्लव आदि।

कर्मधारय समास के अन्य उदाहरण

शोकानल—शोकरूपी अनल, विद्याधन—विद्यारूपी धन, शोकसागर—शोक रूपी सागर, भवसागर—भवरूपी सागर, भवपाश, आशालता, बचनामृत, भक्तिसुधा, विरहसागर, मुखचन्द्र, करपल्लव, नरसिंह, नयनकमल आदि।